

a) Stirling boiler :- स्टर्लिंग

बायलर पर चढ़ना तथा उप-साधन  
बगै- दोरे हैं। जब संभरण  
के लिए इस के पिछले भाग  
में फीड चेक वाल्व तथा दोरा  
है। प्रत्येक इस पर सुरक्षा वाल्व  
जब सूचक तथा दाब गेज बगै  
दोरे हैं। तब यह इस में बगी निष्कास  
दोरी की खोलकर इसमें एक्जॉस्ट  
तब यह की बाहर निष्कास जा  
सकता है।

b) La-mount Boiler :- लॉ-माउंट बायलर

में एक भाप इस दोरा है। इस  
इस के अन्दर संभरण जब निरोपयोग्य  
के माध्यम से उतारा है। भाप इस  
संभरण जब की उच्चदाब पर जब  
जलियों में परिसंचरित करना है। यह  
जिमा अपकेन्डी पम्प की सहायता से  
जिमा जाता है। परिसंचरित पम्प

इस जल वितरण ~~के~~ से ही  
इस भारिफिल के माध्यम से विभिन्न  
जलियों में जाता है। इसमें 180 लिटर  
सेमी<sup>2</sup> पर 45 से 50 मीटर तक  
दाब तथा 590°C तापमान  
पर 45 से 50 मीटर तक / घंटा तक  
दर से अतिरिक्त भाप उपजायी  
जा सकती है।

काकर १० वायव्य → काकर न

वायव्य एक शीत वेदनाकार

शीत के समान एवं गुम्बनुमा

उत्पादनी का दोगा है। इन गुम्बद

— गुमा आकृति के समाने उपर

उष्मा का निम्न चिमणी द्वारा

वायुमण्डल में निम्न लने वि

अवस्था होती है। इनका

शीत अर्द्ध गोलीय आकार

का होता है। खोब के निचले  
भाग पर भट्टी होती है।

~~इसमें~~ इसमें शरब गरम तथा जाली  
बनी है दूध गोसू करि उलमा  
अग्नि - बाणियो का अन्तर्लि करि

जाली है। जिससे खोब में  
भरा पानी गरम होता है।  
और भाप बनती है। शीश-

वालय के द्वारा खोब के

अर्ध - शीर्ष भाग में भाप एकत्र

हो जाती है। निमनी में एक

डम्पर बना होता है। जो

प्रभाव उत्पन्न करके भट्टी

में वायु के लक्षण के नियंत्रण

के साथ - साथ फलू शीश

के निष्कास का भी नियंत्रण

करना है।